।। मलिनता को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ मलिनता को अंग लिखंते ||

|| रेखता ||

रज बिरज सूं देहे ऊतपन भई || गर्भ के बास नव मास रहियो ||
ऊँच अर निच को अेक अस्थान हे || अेक भग द्वार होय जन्म लीयो ||
सप्तही धात तत्त पाँच को पुतळो || आत्मा अेक संसार सारो ||
अेक प्रमात्मा सकळ कूं सिरजीया || अब मोय बताय दे गोत न्यारो ||
अेक ही अहार नीहार सुखराम के || झरे नव द्वार मळ मुत्र मांही ||
अेसा सरीर मे बास कर पांडीया || सुच आचार को काम कांई || १ ||

(ब्राम्हण लोग कहते है,कि हमारी जात बहुत पवित्र है और हम वर्णो मे सभी से ऊँचे है । इसके बारे में आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि अरे,तुम्हारी देह किस चीज से बनी है वह तो देखो । स्त्री का रज और पुरूष के वीर्य से तुम्हारी देह बनी है । तो इसकी पवित्रता देखो,की स्त्री रजस्वला जब होती है तो तब उसे चार दिन तक कोई स्पर्श भी नही करता है । और वीर्य कितना अपवित्र है यह सभी लोग जानते ही है । स्त्री के रजस्वला हो जानेपर उसे कोई स्पर्श नही करते है तथा उसे भी किसी को भी लोग हाथ लगाने नही देते है मतलब यह रज अशुद्ध है । इन अशुद्धो से यह ब्राम्हण का शरीर बना है । और गर्भ मे नौ महीने तक स्त्री के रज से ही पोषण होकर शरीर बना । मलेच्छ तक भी कपडे को बूंद लगने पर स्नान करते है तो ऐसे अपवित्र वस्तु से तुम्हारा शरीर बना है । और फिर गर्भवास मे नौ महीने रहे । वहाँ कैसी अपवित्र जगह थी वह देखो,जब मां के उदर मे थे मां जो कुछ खाती थी उसका विष्टा होती थी और जो पीती थी उसका मुत्र बनता था । उस विष्टा और मुत्र में नौ महीने तक गर्भ मे रहे । हम ब्राम्हण ब्रम्हा के मुख से,क्षत्रिय भुजा से,वैश्य पेट से और शुद्र पैरो से उत्पन्न हुए है ऐसा ब्राम्हण लोग कहते है परन्तु कोई भी मुख से,भुजा से,पेट से या पैरो से उत्पन्न न होता,सभी चारो वर्ण एक भग के द्वारा ही जन्म लेकर आये हुए है । तो भी ब्राम्हण कहते है कि हम ऊंचे है । अरे तो ऊंचे कैसे और नीच कैसे?जैसे शुद्र साढ़े तीन हाथ ऊंचे और वैश्य सात हाथ ऊंचे, क्षत्रीय चौदह हाथ ऊंचे और ब्राम्हण अट्ठाईस हाथ ऊंचे,इस तरह से यदी तुम्हें पैदा करनेवाले ने किया होता तो तुम भी ऊंचे कहलाते परन्तु पैदा करने वाले ने एक भगद्वार से उत्पन्न करके एक जैसा ही पैदा किया है । तब तुम उत्तम,दूसरे मध्यम कैसे हुए तो भी तुम ब्राम्हण कहते,कि हमारा वर्ण रंग उत्तम है । जैसे ब्राम्हण का सफेद,क्षत्रीय का लाल,वैश्य का पीला और क्षुद्र का काला ऐसा वर्ण कहते है परन्तु ब्राम्हणों मे चारो रंग के मनुष्य है और शुद्रो मे भी कितने ही सफेद रंग के,कितने ही लाल रंग के और पीले रंग के मनुष्य है फिर कम जादा वर्ण कहाँ रह गया । उत्पन्न कर्ता ने वर्ण अलग अलग पैदा किया होता तो ऊँच और नीच वर्ण माना जाता । ब्राम्हण कहेगा की हमारी जात ब्राम्हण है

परन्तु दूसरी भी बहुतेक जातीयो में तुम्हारी अपेक्षा कितने ऊँचे हो गये है वह देख लो । १ वशिष्ठ–अप्सरा (गणिका)पुत्र । २ कृष्ण–द्वैपायन व्यास मत्स कन्या ढ़ीवर महार की लड़की से । ३ महामुनी–मातंगी पुत्र । ४ विश्वामित्र– क्षत्रिय पुत्र । ५ श्रृंगी ऋषी– हरीणी पुत्र । ६ अगस्त ऋषी–कुंभ (घड़े से)। ७ ब्रम्हा–कमल से । ८ वाल्मिक–सांडली पुत्र,कोई कोई पासी पुत्र,कोई भिल्ल, कोई कोळी पुत्र कहते है । ९ गौतम–गाय से । १० नारद–दासी पुत्र । ११ अनुचर ऋषी–हाथीनी पुत्र । १२ द्रोणाचार्य–द्रोण से । १३ भारद्वाज–शुद्रीण से । १४ मातंग ऋषी–मातंगी (मांगीन)से । १५ मंडुक ऋषी–मेढ़की के गर्भ से । १६ अंगीक ऋषी–मधु(शहद)से । १७ जांबुक ऋषी–जांबुक से । १८ कौशिक ऋषी–कुश से । १९ दूसरा वाल्मिक–शर्गरा (स्वपच) । २० गोकर्ण–गाय से । ये ऐसे ऐसे दूसरी जातीयों मे भी तुमारे से अनेक उंचे हो गये फिर जाती का कारण क्या रह गया कर्म से ब्राम्हण है कहते हो तो कर्म किसी को भी करने आता है और देह को ब्राम्हण कहा जाय तो ब्राम्हण के मरने पर उसके शरीर को जलाने वाले को ब्रम्ह हत्या लगनी चाहिए और नाम को ब्राम्हण कहें तो नाम अनेक है और जनेऊ पहने से ब्राम्हण कहें,तो तुम्हारी स्त्रीयों को जनेऊ नही है । वे जनेऊ के बिना शुद्रणी है । उनके हाथों का तुम खाना खाते हो । सभी भी ब्राम्हण से लेकर अती शुद्र मलेच्छ, चाण्डाल तक की देह सात धातुओं की बनी हुयी है । सात धातु (रस,रूधिर,मांस,मेद,मज्जा,अस्थी और रेत)इस तरह से सभी की देह सात धातु की बनी हुयी है । शुद्र मे रक्त है तो ब्राम्हण मे कोई दूध नही है । शुद्र मे हड्डीया है तो ब्राम्हण मे कोई चन्दन की लकड़ी नही है । इसी तरह सभी एक जैसे धातु के सभी की देह उत्पन्न हुयी है । और जिस पाँच तत्व का शुद्र का शरीर बना है उसी पाँच तत्व का ब्राम्हण का भी शरीर बना है । ऐसे ये सभी के सभी सात धातु और पाँच तत्व के शरीर होते हुए,उसमें सारे संसार में आत्मा एक जैसी है और एक ही परमात्मा ने सभी ऊँच और नीच को उत्पन्न किया है तो अब मुझे बताओ । गोत्र अलग अलग(ऊँच और नीच गोत्र)कैसे हुए?(और जातीयाँ कैसे हुयी?)और सभी आहार(खाना–पीना)एक जैसे ही दिखाई देता है । उन खाने के पदार्थो मे जो दूध है वह जानवरों की हड्डी मांस छानकर उससे दूध निकलता है । और जो तुम पानी पीते हो । उसमें नौ लाख जाती के जीव रहते है । उन जीवों की पत्नीयाँ कछुवे की कछुवी,मत्स्य की मछली,मेढ़क की मेढ़की, मगरमच्छ की मगरीन इस तरह से नौ लाख जाती के जीवो की औरते(पत्नीयाँ)पानी मे ही रहती है । उस पानी में ही रजस्वला होती है और पानी मे ही प्रसूती होती है । वह उनकी सभी गन्दगी पानी मे ही रहती है तथा वे पानी मे ही मरती भी है और पानी में ही सड़ती है ऐसे पानी को तुम पीते हो,उसी पानी से कोई भी पवित्र काम करते हो और खाना खाते समय हड्डीयों से पीस कूट कर तुम अन्न खाते हो । हड्डीयों के दातों से पीस कूट कर खाते हो और तुम्हारे शरीर में मल,मुत्र,मेद,मज्जा

इस तरह से भरे हुए है,तुम्हारे शरीर के नौ द्वारो से मल-मुत्र झरते रहता है ऐसे शरीर मे तुम निवास करते हो । अब शुच्च और आचार का काम क्या रह गया?(एक ही बाप के पुत्र एक ही परमात्मा ने पैदा किए हुए,ऊँच और नीच कैसे होगे?)।। १ ।।

कुबुध कळाळ घरे बिषे मद पी रह्यो ।। काम चमारड़ो तोय चूंटे ।।
भूक की भांग पी मन बिकळी भयो ।। मेर मरजाद बिन पड़े ऊठे ।।
पाप तो पारधी फंद ले रोपीयो ।। भ्रम के भिलड़े भाल संद्यो ।।
नेण कसायड़ो हेर कर मारसी ।। म्होका जाळ माहे जीव फंद्यो ।।
ठग अहँकार ब्हो प्यार कर ठगीयो ।। लोभ लबारड़ो नित लोढे ।।
मेण का पांच पचीस तोय लूंटसी ।। सबळ सरणा बिन नाय छोडे ।। २ ।।

और तुम्हारे अन्दर जो कुबुद्धि है,वही कलाल(दारू बेचनेवाला) है । और विषय रस लेते हो, यही दारू पीना है । और जो तुममें कामना है,वही चमार है । जैसे चमार चमडे को तोड़ता है,वैसे ही कामना तुम्हें तोड़ती रहती है । भूख लगती है और भूख से मन ब्याकुल हो जाता है । जैसे भांग पीने से मनुष्य ब्याकुल हो जाता है । उसी तरह भूख से ब्याकुल हो जाता है । और मेर मर्यादा के बिना नशे मे जैसे गिरता-उठता है और ये पारधी जैसे फंदा लगाता है । वैसे ही पाप कर्म तुम्हें फांसे मे गिरा लेता है और तुम्हारे अन्दर जो भ्रम है वही तुम मे भिल्ल है । वह भ्रम का तीर मारते रहता है और ये आँखे (दृष्टी)जो है,वे कसाई है । यह खोजकर मारता है । यह जीव यहाँ मोह के जाल में फँस रहा है,तुम्हारे अन्दर जो अहंकार है,वही तुममें ठग है । वह अंहकार हमेशा तुम्हे ठगते रहता है और तुममे जो लोभ है,वही लोहार है । लोहार जैसे लोहे को पीटते रहता है । वैसे यह लोभ तुम्हें पीटते ही रहता है । ये पाँच इन्द्रियाँ और पच्चीस प्रकृती ये मेणा(एक लूटनेवाली जात)है यह तुम्हे लूटती है तो सबल की(बलवान की) शरण लिए बिना ये किसी को भी नही छोड़ेगें । ।। २ ।।

क्रोध चंडाळ अर चाय ब्हो चूंहड़ी ।। त्रस्ना तेलणी प्राण पीले ।।
मंछया धोबणी पटक पछाडीयो ।। दुबध्या डाकणी तोय कीले ।।
झूट पट साळ मे करम कोळी बसे ।। कपट का पटकूं साध जोड़े ।।
कुटम की बाड़ीयां काळ माळी धस्यो ।। फूल फळ कुपळया मर्रोड तोडे. ।।
सब ही जात तोय पिंड मे पांड़ीया ।। सुच आचार किम चले थारा ।।
दास सुखराम चहूं ब्रण ही शुद्र हे ।। ब्रम्ह की भक्ति किया ब्रम्ह सारा ।।३।।

और तुम्हारे अन्दर जो क्रोध है,वही चाण्डाल है । एक बार एक गाँव के पाटिल को,निच जात के मनुष्यपर क्रोध आकर,उसे मारने के लिए लाठी उठाकर गया,तब वह बोला,कि बाबा थोड़ा रूको,मेरे पास रोटी है,वह मुझे किनारे रखने दो फिर मुझे मारो,नही तो मेरी रोटी अशुद्ध हो जायेगी तब पाटिल बोला,कि अरे,मुझसे तेरी रोटी अशुद्ध होती है

क्या?तब वह निच जातका मनुष्य बोला,तुमसे तो रोटी अशुद्ध नही होगी । परन्तु यह जो तुम्हारे अन्दर क्रोध आया है । वह चाण्डाल(मेहतर)है । तो चाण्डाल से हमारी रोटी अशुद्ध होती है । और वह चाण्डाल तुममे है । इसलिए मै रोटी अलग रखता हूँ । इसी तरह से एक बार एक चाण्डालीन सड़क पर झाड़ू लगा रही थी और दुसरी तरफ से एक पंडित आया । उस पंडित ने उस मेहतरनी को बोला,की तुम किनारे पर हो जा,तेरी छाया मेरे उपर पड़ेगी इसलिए तूं झाड़ना बंद कर दे । तूं झाड़ू लगा रही है । तो उसकी धूल मेरे शरीर पर आती है वह मेरे उपर आने मत दे । वह मेहतरनी रूक गयी । परन्तु पहले से उड़ती हुयी धूल कोई रूकी नही । तब पंडित को बहुत क्रोध आया । तब वह मेहतरनी उस पंडित के नजदीक आने लगी और उसकी छाया पंडित पर पड़ने के कारण,उस पंडित को बहुत क्रोध आने से,गालीयाँ देने लगा । तब वह मेहतरनी उस पंडित का हाथ पकड़कर बोली कि चल मेरे दूल्हे घर चल । तब वह पंडित और भी भड़ककर गालियाँ देते हुए बोला कि मुझे हाथ से छूकर अशुद्ध कर दी और मुझे अपना दूल्हा कहती है इसकी तुझे लाज क्यों नही आती । तब मेहतरनी बोली,की महाराज तुमने ही तो मुझे कथा मे बताया था । कि यह क्रोध चाण्डाल है । तो वही क्रोध जो तुम्हारे अन्दर इस समय आया है । वही मेरा पती मेहतर है । उसी को मै ले जा रही हूँ । यह बात सुनकर पंडित हँसने लगा । तब मेहतरनी बोली,की अब बिलाशक जाओ । मैने अपने पास से निकाल लिया और तुम्हारे अन्दर जो चाहणा है वह चुहड़ी जैसे तुम्हे त्रास देती है और तुममे जो तृष्णा है वही तेलीन है । (तेलीन जैसे तेल निकालने के लिए तिल को पेरती रहती है । वैसे ही तृष्णा तुम्हारे प्राण को पेरती रहती है और तुम्हारी मनीषा तुम्हें पटक कर पछाडते रहती है और तुम्हारे अन्दर जो दुविधा है वह डाकीन है ।(जैसे डाकीन कलेजा खाती है ।)वैसे ही दुविधा तुम्हारा कलेजा खाते रहती है और तुममे जो असत्यता है वही तुम्हारे अन्दर कोली है । जैसे कोली जाल बुनते समय टूटे हुये डोरे साधते रहता है । वैसे ही तुम्हारे कर्म जो है,वे मल्लाह के जैसे है । जैसे कपडा बुननेवाला कोष्टी कपड़ा बुनता है।)वैसा ही यह कपट है । यह कपट तुम्हारे कर्म सांधकर जोड़ देता है और तुम्हारा यह कुटुम्ब एक बगीचा है । जैसे माली बगीचे मे आकर फूल-फल और कोम मरोड़ कर,तोड़-तोड़ कर ले जाता है वैसे ही इस परिवार के बगीचे में काल आकर माली की तरह,फूल(नये खिले हुए लड़के या लड़की)और फल(फलों मे कच्चे फल यानी,जवान,नौजवान और पक्के फल प्रौढ)और कोम(नये निकले हुए अंकुर नये जन्म लिए हुए बच्चे)इन्हे माली के जैसे काल तोड़ मरोड़कर ले जाता है । अरे ब्राम्हण ये सभी जातीयाँ तुम्हारे शरीर मे है । अब तेरा शुच्चता और आचार कैसे चलेगा?आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि ये चारो वर्ण शुद्र ही है,परन्तु जिसने सतस्वरुप ब्रम्ह की भक्ती करके सतस्वरुप ब्रम्ह जाना वे सभी ब्राम्हण है । फिर ब्राम्हण,क्षत्रीय,वैश्य,शुद्र

इनमे से कोई भी हो सतस्वरुप ब्रम्ह की भक्ती करने वाले सभी ब्राम्हण होंगे ।।३।।

कूकरे जाय ठठेर को चिगळीयो ।। आण घर मांय मुख छेड़ हांड़ी ।।
सेर अध सेर की घाट तां मांय हे ।। ब्राम्हणी देख जुं नाय छाड़ी ।।
ऊंदरा मार मंजार घर मे रहे ।। कीड़ीयां कीट वहां बास किया ।।
भिष्ट की माखियां ऊड घर भेळीयो ।। थाळ प्रसाद कूं छाय लीया ।।
नार रूत ध्रम ज्हाँ रक्त जळ बेहेत हे ।। सरप ता छांय अंध होत वांही ।।
दास सुखराम आछोत माने नही ।। करत प्रसाद ऊण हात जांही ।। ४ ।।

और कुत्ता जाकर पहले मरे हुए जानवरों के,हाड़ मांस खाकर आया वही कुत्ता मुंह न धोकर, उस रक्त से भरे हुए मुख से,तुम्हारे घर मे आकर मिट्टी की हंडी मे रखे हुए घाट को,ज्वार पीसकर उसे पकाते है,उसी को घाट कहते है अपना मुंह लगाता है । उस हंडी मे रखी हुयी सेर आधा सेर ज्वार का घाट,(जिस हंडी मे थी,उसमे)कुत्ते ने मुंह डाला ऐसा ब्राम्हणी ने देखा परन्तु ब्राम्हणी ने वह हंडी या वह घाट कोई फेंका नही । और कुत्ते ने मुंह डाला,ऐसा देखकर भी ब्राम्हणी बोली,कुत्ता मुंह डाल रहा था,परन्तु मैने डालने नही दिया और तुम्हारे घर मे बिल्ली रहती है । तुम्हारे घर मे रहकर बिल्ली चूहे मारती है और खाती है और वही बिल्ली मुँह पानी से न धोकर,रसोई घर मे घूमती है और किसी न किसी को तो मुँह लगा ही देती है और घर मे ही चीटीयाँ कीड़े मकोड़े रहते है और विष्टा पर बैठी हुयी मक्खियाँ पैर न धोते हुए जहाँ लगे वहाँ बैठती है । और तुम्हारे लिए बनाये गये भोजन पर बहुत सी मक्खियाँ छायी रहती है और स्त्री के रजस्वला होने पर रक्त बहते रहता है यह इतना अशुद्ध होता है,कि रजस्वला स्त्री की सर्प के उपर छाया पड़ते ही,वह अन्धा हो जाता है और गर्भवती स्त्री के अन्दर गन्दगी भरी हुयी रहती है । गर्भवती स्त्री की छाया से भी,सर्प अंधा हो जाता है । तो यह इतना गन्दा होते हुए भी उसे मानते नही और ऐसी गर्भवती के हाथो का बनाया हुआ,तुम भोजन करते हो । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ४ ।।

कवत ।।

चुहडो चित्त हराम ।। भ्रम भंगी घट होई ।।
दुबध्या दाणू नार ।। मन बिकळी कहे सोई ।।
मन्छया नारी संग ।। तरक तेलन घट मांई ।।
गोत संग अज्ञान ।। आस बेस्या घट क्वाई ।।
थोरी मन मे मान ।। ठग ऊर घात रहावे ।।
अे सुखिया संग होय ।। ऊत्तम सो कुण कुवावे ।। ५ ।।

ये नीच जाती के जो लोग है । उनकी अपेक्षा भी नीच तुम्हारे शरीर मे भरे है । तुम्हारे शरीर के नीच,बाहर के नीचों से अधिक कौन से कहोगे तो),तुम्हारे चित्त में हरामखोर

पना जो है वही चूहड़ा(मेहतर के जैसी नीच जाती)है और तुममे भ्रम है यही तुम्हारे शरीर में मेहतर है और तुम्हारे अन्दर जो दुविधा है वही दानव(राक्षस)है । तुम्हारा मन दुविधा से ब्याकुल हो जाता है वही तुम्हारी काया में राक्षस की पत्नी राक्षसीन है । वही राक्षसीण तुम्हारा मन ब्याकुल करती है और तुम्हे जो इच्छा उत्पन्न होती है यही तुम्हारे साथ स्त्री है और तुम्हारे अन्दर जो तर्क उत्पन्न होता है वही तुम्हारे शरीर मे तेलीन है और तुममें जो अज्ञान है वही तुम्हारा गोत्र(कुटुम्ब–परीवार)है और तुम्हारे मन मे जो आशा रहती है वही तुम्हारे घट मे वैश्या है और तुम्हारे मन मे मान है की मेरा मान सन्मान होना चाहिए यही तुम्हारे अन्दर थोरी (मांग के जैसी एक नीच जाती)है और तुम्हारे हृदय में घात(दगा)है वही तुम्हारे अन्दर ठग है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि ये साथी शरीर में रहते है,उसे उत्तम कौन कहेगा ? ।। ५ ।।

मोची के घर जाय ।। आण जोड़ी नर लेवे ।।
पेरे तब पग मांय ।। आण छांटो जळ देवे ।।
जळ सूं भर मस्काय ।। खाल सो सरब रंगाणी ।।
तब बेतो जब साज ।। नीर सूं छिड़ के आणि ।।
मधम उत्तम अब किम भयो ।। कांहा लगाई सूँठ ।।
सुखराम कहे सुण लीजीयो ।। भ्रम क्रम की मूठ ।। ६ ।।

और ब्राम्हण लोग चमार के घर से,जूता खरीद कर लाते है । वह जूता जब पैरो मे पहनते है तब जूते पर पानी छिड़कते है । पानी से यदी शुद्ध होते रहता तो उस चमड़े को रंगते समय चमार ने पानी से भरकर चमड़े को रंगा था और जब जूता सील रहा था तब उसपर पानी छिड़कता था । तब वह जूता पानी से उत्तम नही हुआ,मध्यम ही रहा । वही जूता तुम्हारे पानी से उत्तम कैसे हो गया? तो यह क्या सूंठ(चोखटाई)लगा रखी है,आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि सभी लोगो सुन लो । यह तुम्हारी भ्रम की और कर्मो की पकड़ी हुयी मुठ है । ।। ६ ।।

ब्रम्ह न चीन्यो जाय ।। ध्यान की गम नही कांई ।।
नही अजपा जाप ।। प्राण की सुध न भाई ।।
कर हे पान अपान ।। भांग सो पिवे तमाखु ।।
सोई बिप्र चंडाळ ।। अर्थ गीता का भाखु ।।
कळे भ्रम त्यागो करे ।। सुखदेव दया न कोय ।।
सो हे ब्राम्हण केण का ।। अस्सल कसाई होय ।। ७ ।।

तुम ब्राम्हण होकर भी तुमने सतस्वरुप ब्रम्ह को तो पहचाना ही नही । सतस्वरुप ब्रम्ह का ध्यान कैसे इसकी भी तुम्हें जानकारी नही और अजप्पा का जाप क्या है यह भी तुम्हे नही मालूम और प्राणायाम की तुम्हें समझ नही है परन्तु अपान(नही पीने जैसी वस्तु)पान

करते हो (पीते हो ।)(हुक्का,हुक्के पर अग्नी,अग्नी के नीचे तम्बाखु । उस तम्बाखू का धुंआ पानी में हुक्के से होकर जाता है । वही धुंआ पानी से नली द्वारा पीते है । इस हुक्के की नली से निकला हुआ धुंआ,एकदम दारू जैसा है वह तुम पान करते हो और भांग पीते हो तथा तम्बाकु (चिलम का)धुंआँ पीते हो ।

(|| पद्म पुराण का श्लोक ||)

धुम्र पान रतं विप्रं दानं कृत्वोतुयो नरः ।
दातारी नरकं यांति ब्राम्हणो ग्राम शूकरः ||
तेषां संध्या वृथा ज्ञान वृथा वैराग्य सेवनम् ।
तीर्थ स्नान व्रतं दानं धुम्र पाना हया सदा || ||

तो ये ऐसे अपान पान करने वाले वे ब्राम्हण चाण्डाल है । यह हुक्का,भांग,तम्बाकू पीने की अनुमती सारी गीता का अर्थ देखा,परन्तु इन्हें पीने की अनुमती कही भी नही दी हुयी नही मिली । और पद्म पुराण में तम्बाकू पीने का बहुत निषेध किया गया है और कलह करते है । तथा भरमते फिरते है और जहाँ मांगने के लिए जाते है । वहाँ उसने नही दिया या कम दिया, तो त्रागा करते है और मन मे दया बिल्कुल ही नही है तो ऐसे ब्राम्हण कहने को ब्राम्हण तो है, परंतु ये असली कसाई है । || ७ ||

नही ब्रम्ह पिछाण || ज्ञान की गम नही काई ||
करे झोड ब्हो भांत || पत ग्रुह झेले जाई ||
लेत ग्रहण मे दान || और मूवा पर ल्यावे ||
घरडु जूते जाय || रांध घर भोजन पावे ||
सो ब्राम्हण हे केण का || सुण लीज्यो नर नार ||
गांव कूँट सुखराम कहे || तां सूं पेले पार || ८ ||

इस ब्राम्हण को सतस्वरुप ब्रम्ह की पहचान भी नही और सतस्वरुप ब्रम्हज्ञान की जानकारी कुछ भी नही है । ये प्रतिग्रह लेने मे बहुत तकरार करके मांग–मांग कर जबरदस्ती से लेते है और भी ब्राम्हण लोग ग्रहण के समय भी दान लेते है । ग्रहण के समय मांग और भंगी जाती के लोग दान लेते है । वैसे समय ब्राम्हण भी अष्ट महादान और गुप्त दान लेते है और घर मे मरा हुआ मनुष्य रहा,तो भी दान लेते है । बिमार पडकर मरने के समय जमीन पर सुला देते है । उस समय उसका कंठ कफ से घर घर बोलकर,घरडू जोतते रहता है । उस समय उसके घर जाकर ब्राम्हण लोग भोजन बनवाकर भोजन करते है । कितनी ही बार,ब्राम्हण लोगो की रसोई बनती रहती है और उधर उसका प्राण निकल जाता है । प्राण निकलने की बात घरवाले छिपाकर रखते की बाहर प्रगट मत करो नही तो ब्राम्हण नही खायेगें । रसोई बेकार होगी । ऐसा कहकर उस मुर्दे को कुछ ओढ़ाकर ढंक देते है और झूठा ही कहते है,कि जीव है । इस तरह से सभी ब्राम्हणों के खाना खाते ही घर के लोग रोने लगते है । ऐसी घटना सौ मे से तीस बार

तो जरूर होती है । आखिर मृत्यु समय तो सौ मे नब्बे बार खाते है । और उस समय दान लेते है । उस दान को घुरूड काको दान मारवाडी भाषा मे कहते है । घुरूड काको दान लेना बहुत बुरा होता है । ऐसा सभी लोग कहते है । तो ऐसे ये ब्राम्हण कहने के ब्राम्हण है । जो सभी स्त्री–पुरूष सुनो,ये ब्राम्हण तो मेहतर की अपेक्षा भी बहुत नीच है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है । ।। ८ ।।

हाड़ मास मळ मुत्र ।। और लोही तन तेरे ।।
त्वचा खाल नख चख ।। प्राण पवन मन घेरे ।।
रोग भोग सुत नार ।। और पश्वा सब होई ।।
जो होय जग को व्यव्हार ।। ताय मे कसर न कोई ।।
भग गेले तूं आवीयो ।। अब ब्राम्हण किम होय ।।
अरथ कहो सुखराम क्हे ।। इंष्ट द्वाही तोय ।। ९ ।।

तुम्हारे शरीर मे हाड़,मांस,मल,मुत्र और रक्त है और त्वचा,चमड़ी,नाखून,आंखे,प्राणवायु और मन इसनें घेरा हुआ है । और रोग,भोग औरत–बच्चे,पशु सभी दूसरी जाती के लोगो जैसे तुम्हारे भी है । जो सभी संसारके लोगो का व्यवहार है उन दूसरी जाती के लोगो के व्यवहार में और तुम्हारे व्यवहार मे कुछ भी अन्तर नही है और तूं भग(योनी)के रास्ते से आया है तो अब(संसार में)ब्राम्हण कैसे हुआ है इसका मुझे अर्थ बता । तुम्हे तुम्हारे इष्ट की शपथ है । तूं ब्राम्हण कैसे हुआ यह मुझे बता ? ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ९ ।।

सुणो बेष्णो नांव ।। बिस्न की भक्त समायां ।।
सामी ईण प्रकार ।। शिव कूं निस दिन गाया ।।
बिप्र कहिये अेम ।। बेद ब्रम्हा का बाचे ।।
ब्राम्हण ईण गुण होय ।। ब्रम्ह का चरणा राचे ।।
किसब लार सब जात हे ।। सुण लीज्यो नर नार ।।
किसब गयां सुखराम कहे ।। जात हुई सब खुवार ।। १० ।।

तुम सुनो । विष्णू की भक्ती करने से वैष्णव होता है और रात–दिन शिव का नाम गानेवाले सामी(सन्यासी)होते है और ब्रम्ह की चरणो में रहने से ब्राम्हण होता है । तो जैसा–जैसा, अपना–अपना कसब(हुन्नर)करेगा उन उन हुन्नरो के पीछे सभी जाती है । जाती का कोई भी हो और वह सिलाई का काम करेगा,तो उसे लोग दर्जी कहेगें ।)इसी तरह से अपने–अपने कसब के प्रमाण से सभी जातीयाँ है ये सभी स्त्री–पुरूष सुनो । जिस जाती का कसब छूट गया यानी फिर वह जाती नही के जैसी हो जाती है ।(मिट जाती है)। इसी तरह ब्रम्ह को नही जानने के कारण,उस ब्राम्हण का ब्राम्हणत्व चला जाता है ।) ।। १० ।।

चोपाई ।।

बूझ्यां कहे हम ब्राम्हण हम पिंडत ।। नित ऊठ क्रम कमावे ।।
जन सुखराम भजण की बेळयां ।। हो को भर मंगवावे ।। १ ।।

पूछने पर कहते है,कि हम ब्राम्हण है । हम पंडित है । और नित्य उठकर जो लगे वो कर्म करते है ।(जैसे खेती करना,ऊंट और गाड़ीयों का भाड़ा देना,पत्र लेकर गांवो मे जाना,नौकरी करना,रसोई बनाना,गोबर निकालना,झाड़-झूड़ करना वगैरे शुद्र की सभी तरह-तरह के कर्म करते है और रोटी साथ मे लेकर खेती के काम करने दूर के खेत मे जाते है और वहाँ खाते है । ब्राम्हणत्व के कोई भी कार्य नही करते है । भजन आदी कुछ भी नही करते है) । उषाकाल में भजन करने के समय अपनी अपेक्षा छोटे को,हुक्का भरकर लाने को कहते है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। १ ।।

आरो सुण गांव परगांवा ।। सुबे पोस ऊठ धावे ।।
जन सुखराम हात मे हो को ।। छाणो संग धुकावे ।। २ ।।

और आरा यानी मरने वाले के बाद मे ग्यारहवें-बारहवे दिन ब्राम्हण भोज करते उसे आरा (श्राद्ध क्रिया)कहते है वे कही भी श्राद्ध है,ऐसा सुनकर,तड़के सुबह उठकर अपने गांव से दूसरे गांव मे जाते है । उस समय हाथ मुंह धोने का तो उन्हें समय नही मिलता परन्तु बैठकर हुक्का पीने को भी समय नही मिलने के कारण,एक हाथ मे हुक्का और एक हाथ मे जलती हुयी उपली लेकर रास्ते से चलते जाते है और चलते-चलते हुक्का खींचते रहते है । फिर संध्या स्नान का काम ही क्या रहा?ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। २ ।।

अेक हात आब ने:पकड़ी ।। ने:मुख माय अड़ाई ।।
जन सुखराम चले यूं पंडत ।। जोड़ी खुरे चड़ाई ।। ३ ।।

(और रास्ता चलते-चलते ही),एक हाथ मे हुक्के की आव,(चीलम के नीचे की नली)और (मुंह मे लेकर धुंआ खीचने की नली),यह मुख मे अटका लेते है । और एक हाथ में जलती हुयी उपली लेकर),इस थाठ से ये पंडित दक्षिणा के लिए दौड़ते हुए जाते है और पैरो में चढ़ाऊ जोड़ा पहनकर हुक्का पीते हुए जाते है ।।।३।।

कपड़ा ब्होत गरक रहे मेला ।। क्रिया धर्म न जाणे ।।
सो सुखराम ब्राम्हण अेसा ।। चंडळ रूप बखाणे ।। ४ ।।

और कपड़े ऐसे मैले रहते है,कि उससे दुर्गन्धी आती है । वे अपने कपड़े तक भी साफ नही रखते है । वे ब्राम्हणों की क्रिया और ब्राम्हण का धर्म क्या जानेगे?और क्या करेगे?वे ब्राम्हण तो ऐसे है,कि उन्हे चांडाळ का(मेहतर का)रूप कहो । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ४ ।।

भांग तमाखु अमल तिजारो ।। मिल मिल बोहोत बखाणे ।।

जन सुखराम घणी मन वारां ।। बिप्र बेद ओ छाणे ।। ५ ।।

वहाँ के गांव मे इधर-उधर के चारो तरफ के ब्राम्हण जमा होते है । वहाँ अपने पास की भांग की,तम्बाकू की,अफीम की और पोस्तू की(खसखस की)बखान करते है और सभी मिलकर इन चीजों का वर्णन करते है ।(मेरे पास की अच्छी है और हमारे गांव मे बहुत अच्छी तेज उत्पन्न होती है ऐसी बड़ाई करते है । परन्तु भजन भक्ती और ज्ञान की कोई भी बात नही निकालते है । और अपने पास की तम्बाकू दूसरो को लेने के लिए,एक दूसरे का बहूत आग्रह करते है । इन विप्रो का इन नशे की चीजों की शोभा करना,यही इनका वेद का विचार करना है । ये ब्राम्हण भांग,तम्बाकू,अफीम इसीका ही विचार करते है । यही इनका वेद पढना है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।५ ।।

सारी रात भूरके लेणे ।। बिप्रां नीदं न आई ।।
जन सुखराम भजन की बिरीयां ।। सोय रहया घर माही ।। ६ ।।

(शादी मे ब्राम्हणों को बनीये लोग भूर देते है,शादी की रात को कुछ दक्षिणा देते है । उसे भूर कहते है ।)उस भूर के पैसे लेने के लिए,ब्राम्हण लोग रातभर जागते बैठते है । उस दक्षिणा के पैसे मिल जाने पर,घर मे सो जाते है । और सोते समय यह देखते है,कि अब सुबह हो रही है । और यह भजन करने का समय है । तो अब थोड़ी देर जागकर भजन करनी चाहिए । परन्तु भजन नही करते हुए सो जाते है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ६ ।।

कुंडल्या ।।

ब्रम्ह कर्म क्रिया बाहेरो ।। ब्राम्हण हुवे न कोय ।।
में तुज बूंझु पिंडता ।। आ सच कन झूटी होय ।।
आ सच कन झूटी होय ।। न्याव सूं कहीये मोही ।।
कन ब्राम्हण घर जन्म ।। धार ब्राम्हण ज्यूं होई ।।
सुखराम कहे सुण नार की ।। क्या बिध कीवी जोय ।।
ब्रम्ह क्रम क्रिया बाहेरो ।। बाम्हण हुवे न कोय ।। ७ ।।

और मुखसे कहते हो,कि ब्रम्ह कर्म क्रिया किए बिना ब्राम्हण नही होता है ऐसा तुम कहते हो । परन्तु अरे पंडित,मै तुमसे पूछता हूँ ब्रम्ह कर्म किए बिना ब्राम्हण नही होते यह बात सच्ची है या झूठी । इसका न्याय से विचार करके तुम जो कहते हो,वह बात सच्ची है की झूठी यह मुझे बताओ?या केवल ब्राम्हण के घर जन्म लेने से ही,ब्राम्हण हो जाता है क्या?आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि तुम तुम्हारे स्त्री की क्या विधी किये हो और तुम्हारी स्त्री ब्रम्ह कर्म और क्रिया नही करती होगी तो,वह तुम्हारी स्त्री भी ब्राम्हणी नही हो सकती है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ७ ।।

में तुज बूझूं पिंडता ।। धिन तुम तेरा ज्ञान ।।

नारी घरमे शुद्र हे ।। तुम ब्राम्हण हुवा आन ।।
शुद्र की भीन्न कर माने ।। असल शुद्र घर माय ।।
ताय ऊत्तम कर जाणो ।। सुखराम केहे केणी कीते ।।
रेणी कित कूंई मान ।। में बुझूं तुम पिंडता ।।
धिन तुम तेरा ज्ञान ।।

पंडित मै तुम्हें पूछता हूँ । धन्य तुम हो और धन्य तुम्हारा ज्ञान । तुम्हारे घर की स्त्री(बिना यज्ञोपवीत के)शुद्रीण है ।(फिर शुद्रीण से जन्मे और शुद्रीण के हाथों का खानेवाले),तुम ब्राम्हण कैसे हो गये?तुम शुद्र की घृणा मानते हो तो तुम्हारे घर मे जो ब्राम्हणी है वह तो असली शुद्र है इस ब्राम्हणी को उत्तम कैसे मानते हो? आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि तुम्हारा कहना किस तरफ है और रहना किस तरफ है तो हे पंडित मै तुम्हे कहता हूँ धन्य तुम और धन्य तुम्हारा ज्ञान ।

।। इति मलिनता को अंग संपूरण ।।